बबली का बाजा

पढ़ना है समझना

2081 – बबली का बाजा

प्रथम संस्करण : अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : 2009(1931); 2010(1932); 2011(1933); 2011(1933); 2014 (1936); 2015(1937); 2017(1939); 2018(1940); अगस्त 2018 श्रावण 1940; फरवरी 2019 फाल्गुन 1940; अगस्त 2020 श्रावण 1942; जुलाई 2022 आषाढ़ 1944; अगस्त 2024 श्रावण 1946

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 4T BS

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – लतिका गुप्ता

चित्रांकन – निधि वाधवा

सज्जा तथा आवरण – निधि वाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर – अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता, नरेन्द्र कुमार वर्मा, विवेक मंडल

आभार ज्ञापन

कृष्ण कुमार, *प्रोफ़ेसर* एवं *निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; वसुधा कामथ, *प्रोफ़ेसर* एवं *संयुक्त निदेशक*, केंद्रीय शैक्षिक प्रोद्यौगिकी संस्थान, रा.शै.अ.प्र.प.; के. के. वशिष्ठ, *प्रोफ़ेसर* एवं *विभागाध्यक्ष*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प.; रामजन्म शर्मा, *प्रोफ़ेसर* एवं *विभागाध्यक्ष*, भाषा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प.; मंजुला माथुर, *प्रोफ़ेसर* एवं *अध्यक्ष*, रीडिंग डेवलपमेंट सेल, रा.शै.अ.प्र.प.

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

अशोक वाजपेयी, *अध्यक्ष* एवं *पूर्व कुलपति*, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; फरीदा अब्दुल्ला खान, *प्रोफ़ेसर* एवं *विभागाध्यक्ष*, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; अपूर्वानंद, *रीडर*, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय; शबनम सिन्हा, *सी.ई.ओ.*, आई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; नुज़हत हसन, *निदेशक*, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; रोहित धनकर, *निदेशक*, दिगंतर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सेट)
978-81-7450-882-9

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। *बरखा* की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। *बरखा* बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोज़मर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए '*बरखा*' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। *बरखा* पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। *बरखा* से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक *बरखा* को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रानिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 **फोन** : 011-26562708
- 108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे, बनाशंकरी III स्टेज, बंगलूरु 560 085 **फोन** : 080-26725740
- नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 **फोन** : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी, कोलकाता 700 114 **फोन** : 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स, मालीगाँव, गुवाहाटी 781 021 **फोन** : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*अरुण चितकारा*
मुख्य संपादक	:	*बिज्ञान सुतार*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*अमिताभ कुमार*
सहायक उत्पादन अधिकारी	:	*दीपक कुमार*

बबली का बाजा

पापा बबली मम्मी

एक दिन बबली के घर में सफ़ाई हो रही थी। सारे घर का सामान आँगन में निकला हुआ था। रसोई का सामान भी आँगन में ही था।

रसोई के सामान में बहुत सारे डिब्बे निकले थे।
बबली डिब्बों के ढेर के पास बैठ गई।
बबली ने अपने लिए एक नीला डिब्बा उठा लिया।

बबली ने डिब्बे को हिलाकर देखा।
डिब्बा हिलाने पर छन्न-छन्न की आवाज़ आई।
बबली ने डिब्बे को खूब बजाया।

बबली सारे घर में डिब्बा बजाती घूमी।
बबली सोचने लगी कि डिब्बे में क्या होगा।
उसने डिब्बा खोलकर देखा।

डिब्बे में चावल के दाने थे।
बबली ने डिब्बे को बंद कर दिया।
पहले की तरह उसे बजाती रही।

बबली डिब्बे को अपने साथ लेकर सोई।
रात को बबली के बिस्तर पर एक चूहा आया।
चूहा डिब्बे के सारे चावल खा गया।

बबली ने सुबह देखा कि डिब्बा खुला पड़ा था।
चावल के दाने गायब थे।
उसने माँ से और चावल माँगे।

माँ ने चावल देने से मना कर दिया।
माँ बोली चावल खेलने की चीज़ नहीं है।
चावल तो खाने के लिए होता है।

बबली बहुत उदास हो गई।
वह छत पर जाकर बैठ गई।
वहाँ धुले हुए कपड़े सूख रहे थे।

बबली की नज़र सलवार पर पड़ी।
सलवार का नाड़ा लटक रहा था।
बबली को एक तरकीब सूझी।

12

बबली ने नाड़ा खींचकर निकाल लिया।
उसने नाड़े का एक सिरा डिब्बे से बाँध दिया।
नाड़े का दूसरा सिरा डिब्बे के दूसरी तरफ़ बाँध दिया।

डिब्बे से एक ढोलक बन गई।
बबली ने ढोलक अपने गले में पहन ली।
वह ढोलक बजा-बजा कर छत पर नाची।

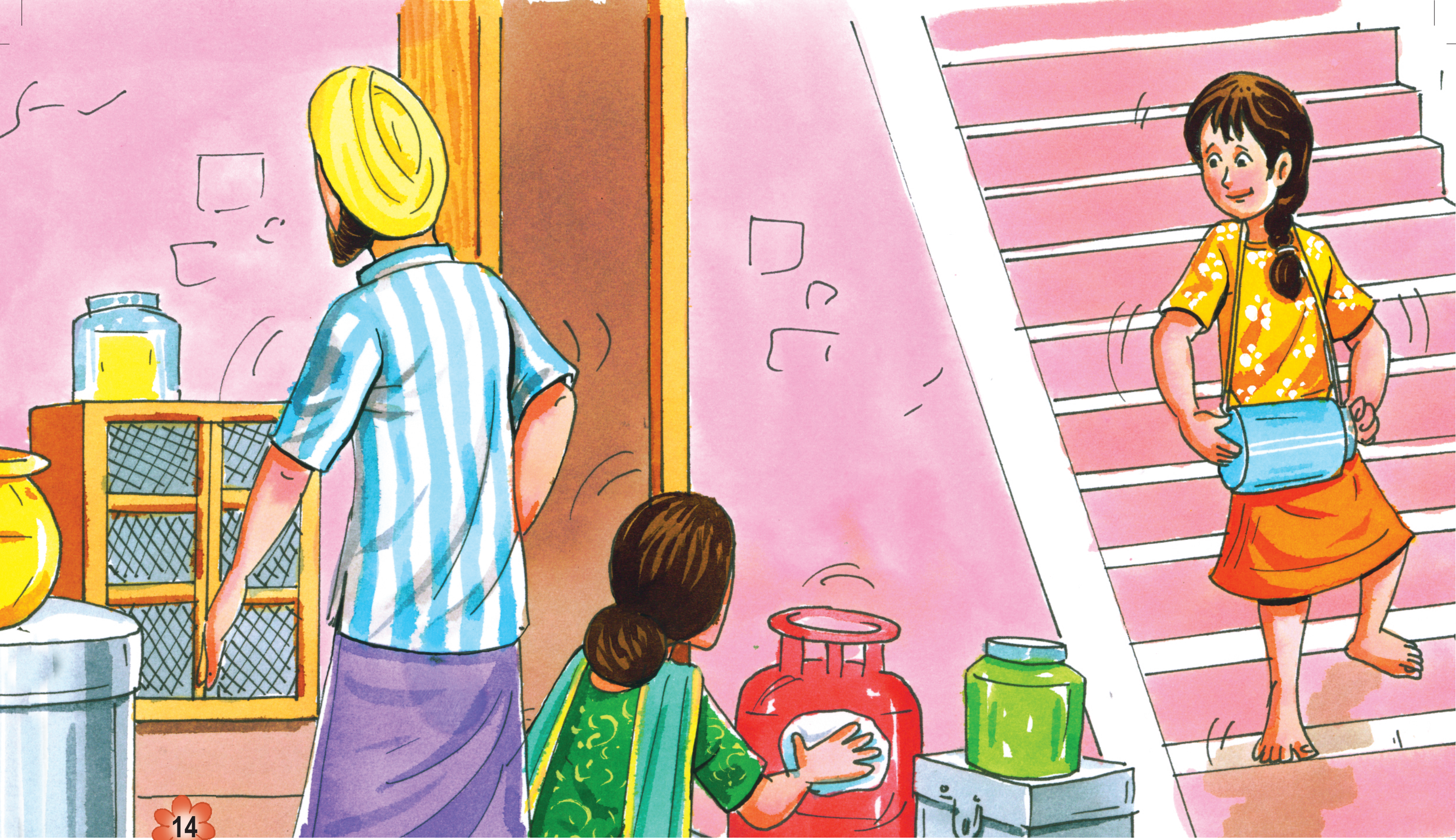

बबली ढोलक बजाते हुए नीचे उतरी।
नीचे अभी भी सफ़ाई हो रही थी।
सामान अभी भी आँगन में ही पड़ा हुआ था।

माँ डिब्बों को साफ़ कर रही थी।
पापा डिब्बों को अंदर ले जाकर रख रहे थे।
जीत सामान में कुछ ढूँढ़ रहा था।

सारे लोग बबली की ढोलक की आवाज़ सुनने लगे।
ढप–ढप–ढप–ढप–ढप–ढप–ढप
बबली गाना भी गा रही थी।

जीत और बबली की और कहानियाँ

अधिक जानकारी के लिए कृपया www.ncert.nic.in देखिए अथवा कॉपीराइट पृष्ठ पर दिए गए पतों पर व्यापार प्रबंधक से संपर्क करें।

स्तर 1
स्तर 2
स्तर 3
स्तर 4

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

2081

विद्यया ऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सेट)
978-81-7450-882-9